www.thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : RTK/10/2014-16
सृष्टि संवत् 1960853117
विक्रम संवत् 2073
दयानन्दाब्द 193

सेवा में,

महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्य प्रतिनिधि

E-mail : aryapsharyana@yahoo.in
Website : www.apsharyana.org
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र दूरभाष : 01262-216222, Mob. 8901387993
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर सम्पादक : मा० रामपाल आर्य
वर्ष : 13 अंक : 27 रोहतक, 14 दिसम्बर, 2016 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का निर्वाचन सम्पन्न

मा० रामपाल आर्य पैनल की जीत

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक का त्रिवार्षिक चुनाव दिनांक 11 दिसम्बर 2016 को सम्पन्न हो गया। सभामन्त्री रहे मा० रामपाल आर्य प्रधान रहे आचार्य विजयपाल को 77 मतों से हराकर विजय प्राप्त की। पूर्वमंत्री ने इस चुनाव में प्रधान के पूरे पैनल को ही हरा दिया।

चुनाव अधिकारी डॉ० सुरेन्द्रकुमार व सहायक चुनाव अधिकारी श्री चन्द्रभान सैनी की देखरेख में प्रात: 9 बजे से सायं 5 बजे तक सभा परिसर बलिदान भवन में मतदान हुआ। इसके लिए चार बूथ बनाए गए थे। दयानन्दमठ के मुख्य द्वार पर पहचान-पत्र चेक करने के बाद ही मतदाताओं को अन्दर जाने दिया गया। चुनाव में कुल 859 प्रतिनिधियों ने अपने मतों का का प्रयोग करना था। चुनाव शैड्यूल में निर्धारित समय सायं 5 बजे तक 819 प्रतिनिधियों ने वोट दिए। इसके तुरन्त बाद मतगणना शुरू की गई। देर रात तक चली मतगणना में प्रधान पद के दावेदार मा० रामपाल आर्य को 444 और आचार्य विजयपाल को 367 वोट मिले।

इस तरह 77 वोटों से मा० रामपाल आर्य को विजेता घोषित किया गया। मा० रामपाल पैनल के ही उपप्रधान श्री कन्हैयालाल आर्य, मंत्री पद के प्रत्याशी आचार्य योगेन्द्र आर्य, उपमन्त्री उमेद शर्मा, कोषाध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा आर्या ने भी जीत हासिल की। मा० रामपाल पैनल से उतरे पुस्तकाध्यक्ष श्री आजादसिंह को निर्विरोध चुना गया।

इस चुनाव में जिला रजिस्ट्रार ऑफ सोसायटीज रोहतक की तरफ से चुनाव पर्यवेक्षक के रूप में श्री सुन्दरपाल व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली की तरफ से श्री वाचोनिधि आर्य ने चुनाव पर्यवेक्षक के रूप में भाग लिया। मतगणना के दौरान तहसीलदार गुलाबसिंह और डीएसपी पुष्पा खत्री पुलिस बल के साथ मौजूद रहे।

क्र.सं.	पद का नाम	नाम प्रत्याशी	अधिकतम मत प्राप्त	परिणाम
1.	प्रधान	रामपाल आर्य	444	निर्वाचित
	,,	आचार्य विजयपाल	367	------
2.	उपप्रधान	कन्हैयालाल आर्य	462	निर्वाचित
	,,	स्वामी कर्मपाल	349	------
3.	मन्त्री	आचार्य योगेन्द्र आर्य	456	निर्वाचित
	,,	स्वामी ब्रह्मानन्द	355	------
4.	उपमन्त्री	उमेद शर्मा	452	निर्वाचित
	,,	राजबीरसिंह	359	------
5.	कोषाध्यक्ष	सुमित्रा आर्या	468	निर्वाचित
	,,	धनीराम आर्य	346	------
6.	पुस्तकाध्यक्ष	आजादसिंह आर्य	निर्विरोध	निर्वाचित
		कार्यकारिणी / अन्तरंग सदस्य		
1.	अन्तरंग सदस्य	आचार्य सर्वमित्र	456	निर्वाचित
2.	,, ,,	डॉ० राजेन्द्र विद्यालंकार	451	निर्वाचित
3.	,, ,,	आचार्य ऋषिपाल	450	निर्वाचित
4.	,, ,,	यशपाल आचार्य	445	निर्वाचित
5.	,, ,,	कमलसिंह आर्य	438	निर्वाचित
6.	,, ,,	वीरेन्द्र आर्य	437	निर्वाचित
7.	,, ,,	कृष्ण कुमार	436	निर्वाचित
8.	,, ,,	रमेश आर्य	436	निर्वाचित
9.	,, ,,	रोशनलाल आर्य	435	निर्वाचित
10.	,, ,,	जगदीश सींवर	431	निर्वाचित
11.	,, ,,	राधाकृष्ण आर्य	424	निर्वाचित
12.	,, ,,	यादविन्द्र बराड़	423	निर्वाचित
13.	,, ,,	वेदप्रकाश आर्य	416	निर्वाचित
14.	,, ,,	श्रीओम्	416	निर्वाचित
15.	,, ,,	सतीश कुमार बंसल	398	निर्वाचित
16.	,, ,,	प्रो० ओमकुमार आर्य	342	------
17.	,, ,,	आचार्य ऋषिपाल आर्य	339	------
18.	,, ,,	सुरेश मलिक	338	------
19.	,, ,,	सत्यवीर शास्त्री	337	------
20.	,, ,,	कृष्ण शास्त्री	336	------
21.	,, ,,	आचार्य राजेन्द्र	333	------
22.	,, ,,	पूर्णसिंह देशवाल	333	------
23.	,, ,,	सुखबीरसिंह शास्त्री	331	------
24.	,, ,,	डॉ० राजकुमार आचार्य	330	------
25.	,, ,,	शमशेर आर्य	212	------

www.thearyasamaj.org

पापों से छुटकारा और महर्षि दयानन्द

❑ पं० महामुनि शास्त्री विद्याभास्कर

स्वाध्यायशील आर्यजनों को सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों के पठन-पाठन से महर्षि दयानन्द जी का निम्नलिखित मन्तव्य सूर्य प्रकाशवत् विदित है-'जो मनुष्य जैसा शुभ-अशुभ कर्म करता है, वह उसके तदनुरूप फल को अवश्य प्राप्त करता है। कोई भी कृतकर्म निष्फल नहीं जाता। किया हुआ शुभाशुभ कर्म का फल यथाकाल समय पर कर्त्ता को भोगना ही पड़ता है। कर्मफल स्वयमेव नहीं मिलता, उसको देने वाला परमेश्वर है। वह किसी के साथ पक्षपात (रियायत व ज्यादती) नहीं करता। कर्मानुसार यथोचित व्यवहार करता है। इत्यादि। परन्तु कहीं-कहीं ईश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना के प्रकरण में श्रद्धालु विचारशील साधकों को ऐसा प्रतीत होता है कि स्वामी जी महाराज भी अपने पूर्वोक्त सिद्धान्त के विपरीत अन्य पन्थाइयों के समान कह रहे हैं। इसका समाधान होना चाहिये। इसलिये 'पाप को क्षमा कर' नामक लेख में प्रदर्शित स्थलों के सम्बन्ध में भी समाधान प्रस्तुत किये जाते हैं। प्रथम विचारशील जनों को यह बात हृदयङ्गम कर लेनी (समझ लेनी) चाहिये कि भाषा की रचना विद्वान् जन प्रतिपाद्य विषय के अनुरूप ही किया करते हैं। प्रत्येक विषय का अपना-अपना उद्देश्य होता है, वह उद्देश्य सतत् (उस-उस) विषय की भाषा से पूर्ण होना चाहिये, इसी में वक्ता की सफलता समझीजाती है। महर्षि दयानन्द जी का बनाया हुआ 'आर्याभिविनय' नामक ग्रन्थ ईश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना रूप विषय का प्रतिपादक है। स्तुति कहते हैं-गुण-कीर्तन (गुणवर्णन) को, प्रार्थना=माँगना याचना, उपासना= समीप स्थिति (समीप होना) अर्थात् ईश्वर के स्वरूप में मग्न होना। स्तुति से ईश्वर के प्रति प्रेमभाव की उत्तरोत्तर वृद्धि होती है। प्रार्थना से निरभिमानिता, सामर्थ्य और सहायता की प्राप्ति होती है। उपासना से तल्लीनता (ईश्वर के स्वरूप में मग्न हो जाना) और ईश्वरीय गुणों की प्राप्ति होती है। दूसरी बात यह भी ध्यान में रखनी चाहिये कि अभिविनय (ईश्वर के प्रति नम्रता प्रदर्शन वा ईश्वर को सर्वव्यापक समझकर आत्म-समर्पण आदि) में भाषा के भावों को सिद्धान्तानुसार ढालना (निकालना) चाहिये। अभिविनय के शब्दों से किन्हीं सिद्धान्त विशेषों का निर्माण करना (निकालना) अनुचित होगा। अर्थात् जहाँ-जहाँ सिद्धान्त की भाषा में और अभिविनय की भाषा में विरोधाभास (विरोध प्रतीत) हो, वहाँ विरोध-परिहारार्थ (विरोध दूर करने के लिए) अभिविनय की भाषा के भावों को ही सिद्धान्तानुसार ढालना (निकालना) होगा, क्योंकि अभिविनय (स्तुति प्रार्थना) की भाषा काव्यमयी (चमत्कारपूर्ण) लचक वाली हुवा करती है तथा सिद्धान्त की भाषा सदा कठोर (दृढ़) और अपरिवर्तनशील होती है। मान्यवर विद्वान् पं. विद्यासागर जी ने आर्याभिविनय के चारस्थल शंकनीय समझकर विचारार्थ प्रस्तुत किये हैं। अब उन पर क्रमशः विचार किया जाता है। 1. आर्याभिविनय की द्वितीय प्रकाश के प्रथम मन्त्र की व्याखया में लिखा है- '[मनसा वाचा कर्मणा अज्ञानेन प्रमादेन वा सद् यत् पापे कृतं मया, तत्तत् सर्वं कृपया क्षमस्य। ज्ञानपूर्वकपापकरणान्निवर्त्तय माम्। मन से, वाणी से और कर्म से अज्ञान वा प्रमाद से जो-जो पाप किया हो, किं वा करने का हो, उस-उस मेरे पाप को क्षमा कर (और) ज्ञानपूर्वक पाप करने से भी मुझे रोक दे।] जिससे शुद्ध होके मैं आपकी सेवा में स्थित होऊँ।' समाधान-पूर्वोक्त सन्दर्भ में शंकराऽस्पद (शंका का विषय) पद 'क्षमस्व' (क्षमा कर) है। महाभाष्यकार आचार्य पतञ्जलि जी का वचन है- '**अनेकार्था अपि धातवो भवन्ति।**' अर्थात् '**धातूनामनेकार्थाः**'। इसका भाव यह है कि धातु पाठ में जो धात्वर्थ (धातुओं के अर्थ) आचार्य पाणिनि जी ने लिखे हैं केवल वही अर्थ उन धातुओं के नहीं है अपितु उन अर्थों से भिन्न भी अनेक अर्थ उन धातुओं के होते हैं। वे प्रकरणानुसार विद्वानों को समझ लेने चाहियें। धातुपाठ के वादिगण में 'क्षमूष् सहने' ऐसा पढ़ा है तथा सह् धातु का अर्थ-'षहमर्षणे' ऐसा पढ़ा है। मर्षण शब्द के अनेक अर्थों में एक अर्थ पृथक्करण=दूर करना परे हटाना (जुदा करना) भी है। जैसे सन्ध्या के 'अघमर्षण' मन्त्रों का अर्थ करते हुए 'मर्षण' पद का यही पूर्वोक्त अर्थ (दूर करना) स्वामी जी महाराज ने किया है। पाप का दूरीकरण वा छुड़ाना क्या है? अकृत पाप को अपने पास अर्थात् मन में भी न आने देना, तथा कृत पाप का पुनः (दो बार तीन बार आदि) न होने देना ही पाप का दूरी करण है। 'क्षमस्व' इस क्रिया पद से पूर्व 'कृपया' पद भी पठित है जिसका अर्थ है 'सामर्थ्य के द्वारा' ईश्वर की सामर्थ्य क्या है? प्राकृतिक नियम ही ईश्वर की सामर्थ्य है। इस विषय में (सुख-दुःख प्राप्ति के सबन्ध में प्राकृतिक (ईश्वरीय) नियम है-'**धर्मात् सुखम् अधर्माद् दुःखम्**' अर्थात् धर्माचरण से सुख प्राप्ति और अधर्माचरण से दुःख प्राप्ति होना। नियम तोड़ना वा नियम विरुद्ध करना ईश्वर की सामर्थ्य नहीं है। इसलिए 'क्षमस्व' पद का अर्थ कृत (किये हुए) पाप कर्म के फल को 'माफ कर दो=न दो-नष्ट कर दो' ऐसा समझना भूल है। क्योंकि पूर्वोक्त अर्थ का स्पष्टीकरण (खुलासा) स्वामी जी महाराज ने स्वयमेव इसी वाक्य के अन्तिम पद 'निवारयतु' से कर दिया है। अर्थात् 'क्षमस्व' और 'निवारण' दोनों पद यहाँ पर्यायवाची (एकार्थक) हैं। हिन्दी भाषार्थ में जो 'क्षमस्व' का 'क्षमा कर' किया है, यहाँ भी क्षमा का अर्थ निवारण (दूर करना) ही उपयुक्त (ठीक) है, क्योंकि भाषार्थ में एक वाक्यांश है-'किंवा करने का हो'। जो पाप कर्म अभी तक कर्मणा वाचा मनसा (कर्म वाणी व मन से) किया ही नहीं है, उसको क्षमा कर अर्थात् उसका फल न दो, माफ कर दो, नष्ट कर दो, यह करने का क्या अर्थ? क्षमा का निवारण अर्थ स्वीकार करने पर तो अर्थ की संगति बैठ जाती है, उसका निवारण यही है कि-वह हमारे पास कभी न आने पावे, उसकी मन से भी किञ्चित् इच्छा भी न हो। अन्यच्च- यहाँ (इस प्रकरण में) 'क्षमस्व' (क्षमा) का अर्थ निवारण न मानकर 'फल न देना' मानने पर अग्रिम (अगला) वाक्य 'जिससे शुद्ध होके' इत्यादि असंगत हो जावेगा, क्योंकि आत्मा की शुद्धि (निर्मलता) ज्ञानपूर्वक पाप कर्म के त्याग करने से ही हो सकती है। पाप करने और उसका फल न मिलने से तो पापाचरण अधिक होकर आत्मा की मलिनता घटने की अपेक्षा अधिक बढ़ेगी। दुःखित होने पर ही मनुष्य दुःख के कारण को दूर करने का प्रयत्न करता है, अन्यथा नहीं। इसलिये यहाँ पर क्षमा का अर्थ 'दूर करना' अर्थात् निवारण ही वक्ता को अभिप्रेत है। ऐसा समझना चाहिये। क्षमा के निवारण अर्थ में वेद का भी प्रमाण है। तद्यथा-**ओम् शं च नो मयश्च नो मा चनः किञ्चनाममत्। क्षमारपो विश्वं नो अस्तु भेषजं सर्वं नो अस्तु भेषजम्॥** अथर्व० काण्ड 6, सूक्त 57, मन्त्र 3 इस मन्त्र में पठित 'क्षमा' पद का अर्थ 'क्षम्' धातु का अर्थ निवारण (उपशमन) अर्थ ही संगत बैठता है। ऐसा ही अर्थ सायणाचार्य और पं. क्षेमकरण दास जी आदि भाष्यकारों ने भी किया है। मनुस्मृति का प्रमाण-**क्षान्त्या शुध्यन्ति विद्वासो दानेनानिसृकारिणः। प्रच्छन्नपापा जप्येन तपसा वेदवित्तमाः।** मनु०अ० 5, श्लोक 107। संस्कारविधि गृहाश्रम प्रकरण। 'विद्वान् लोग क्षमा से शुद्ध होते हैं।' यहाँ भी क्षमा का अर्थ कुकाम, कुक्रोध, कुलोभ आदि मानसिक विकारों का उपशमन अर्थात् मन से पृथक्करण (दूर हटाना) अर्थ ही अभिप्रेत है। द्वितीय शंका स्थल-'आप जिसको चाहो उसकी ऐश्वर्य देओ'। आ.द्वि.प्र.मं. 11 इस पर अन्य टिप्पणी मान्यवर पण्डित जी ने नहीं लिखी (की)। मेरे विचार में इस वाक्य को इसलिए शंकित समझा गया है कि इससे यह ध्वनित होता है कि कर्मफल देना, न देना, न्यूनाधिक देना तथा कर्म किये बिना भी अच्छा-बुरा फल दे देना ईश्वराधीन है। जैसे ईसाई, मुसलमान आदि मतवादी मानते हैं कि ईश्वर स्वतन्त्र है, वह अपनी इच्छा से सब कुछ कर सकता है। इत्यादि।

समाधान-'आप जिसको चाहो, उसको ऐश्वर्य देओ।' इस वाक्य से पूर्व (प्रथम) और ऊपर (पश्चात्) वाक्य इस प्रकार है-'आप के ही स्वाधीन सकल ऐश्वर्य है। अन्य किसी के नहीं। आप जिसको चाहो, उसको ऐश्वर्य देओ। सो आप कृपा से हम लोगों का दारिद्र्य छेदन करके हमको परमैश्वर्य वाले करे, क्योंकि ऐश्वर्य के प्रेरक आप ही हैं।' यहाँ प्रथम वाक्य में-'आप के ही स्वाधीन सकल ऐश्वर्य है' इस वाक्य में 'आप के ही आधीन है' ऐसा कथन न करके 'स्व' शब्द जो अधिक सन्निवेश किया है, उसका यह अर्थ (अभिप्राय) है-आपका जो

क्रमशः पृष्ठ 7 पर.....

www.thearyasamaj.org

सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी

नवम समुल्लास के प्रश्नोत्तर

❑ कन्हैयालाल आर्य, कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

गतांक से आगे....

प्रश्न 645. क्या जीव इन सब पांच कोशों एवं तीन अवस्थाओं से पृथक् रहता है?

उत्तर-हाँ, इन सब कोशों और अवस्थाओं से जीव पृथक् रहता है। क्योंकि जब मृत्यु होता है तो सब कोई कहते हैं कि जीव निकल गया। यही जीव सबका प्रेरक, सबका धर्त्ता, साक्षी, कर्ता, भोक्ता कहाता है। जो कोई ऐसा कहे कि जीव कर्त्ता, भोक्ता नहीं, तो वह अज्ञानी और अविवेकी है।

प्रश्न 646. षट्क सम्पत्ति से क्या तात्पर्य है?

उत्तर-षट्क सम्पत्ति अर्थात् छः प्रकार के कर्म करना एक-'**शम**'-जिससे अपने आत्मा और अन्तःकरण को अधर्माचरण से हटाकर जितेन्द्रियत्वादि शुभ कर्मों में प्रवृत्त रखना। दूसरा-'**दम**'-जिससे श्रोत्रादि इन्द्रियों और शरीर को व्यभिचारादि बुरे कर्मों से हटाकर जितेन्द्रियत्वादि शुभ कर्मों में प्रवृत्त रखना। तीसरा-'**उपरति**'-जिससे दुष्ट कर्म करने वाले पुरुषों से सदा दूर रहना। चौथा-'**तितिक्षा**'-चाहे निन्दा-स्तुति, हानि-लाभ कितना ही क्यों न हो, परन्तु हर्ष-शोक को छोड़ मुक्ति साधनों में सदा लगे रहना। पांचवां-'**श्रद्धा**'-जो वेदादि सत्य शास्त्र और इनके बोध से पूर्ण आप्त विद्वान् सत्योपदेष्टा महाशयों के वचनों पर विश्वास करना। छठां-'**समाधान**'-चित्त की एकाग्रता।

प्रश्न 647. 'श्रवणचतुष्टय' किसे कहते हैं? **उत्तर**-एक, **श्रवण**-जब कोई विद्वान् उपदेश करे तब शान्त ध्यान देकर सुनना, विशेषतः ब्रह्मविद्या के सुनने में अत्यन्त ध्यान देना चाहिए कि यह सब विद्याओं में सूक्ष्म विद्या है। सुनकर दूसरा, **मनन**-एकान्त देश में बैठकर सुने हुए का विचार करना, जिस बात में शंका हो पुनः पूछना और सुनते समय भी वक्ता और श्रोता उचित समझें तो पूछना और समाधा करना। तीसरा, '**निदिध्यासन**'-जब सुनने और मनन करने से निःसन्देह हो जाये, तब समाधिस्थ होकर उस बात को देखना-समझना कि वह जैसा सुना था, विचारा था, वैसा ही है वा नहीं, ध्यान योग से देखना। चौथा, '**साक्षात्कार**' अर्थात् जैसा पदार्थ का स्वरूप, गुण और स्वभाव हो, वैसा यथातथ्य जान लेना, '**श्रवणचतुष्टय**' कहाता है।

प्रश्न 648. पांच क्लेश कौन-कौन से माने गए हैं? **उत्तर-1. अविद्या**-अनित्य को नित्य, अशुचि को शुचि, अत्यन्त विषय-सेवन रूप दुःख में सुख, अनात्मा में आत्म बुद्धि करना। **2. अस्मिता**-पृथक् वर्तमान बुद्धि को आत्मा से भिन्न न समझना। **3. राग**-सुख में प्रीति। **4. द्वेष**-दुःख में अप्रीति। **5. अभिनिवेश**-सब प्राणि-मात्र की यह इच्छा सदा रहती है कि 'मैं सदा शरीरस्थ रहूँ, मरूं नहीं' इस मृत्युदुःख से भय। इन पांच क्लशों को योगाभ्यास विज्ञान से छुड़ा के ब्रह्म को प्राप्त होके मुक्ति के परमानन्द को भोगना चाहिए।

प्रश्न 649. जैन मत के लोगों में मुक्ति का क्या स्वरूप है?

उत्तर-महावीर तीर्थंकर गौतम जी से 'रत्नसार' नामक पुस्तक में कहते हैं-'ऊर्ध्वलोक में एक सिद्धशिला स्थान है। स्वर्गपुरी के ऊपर 45 लाख योजन लम्बी और उतनी ही चौड़ी है तथा आठ योजन मोटी है। उस सिद्ध शिला के ऊपर शिवपुर धाम, उसमें मुक्त पुरुष अधर रहते हैं। वहां जन्म-मरणादि कोई दोष नहीं और आनन्द करते रहते हैं। पुनः जन्म-मरण में नहीं आते, सब कर्मों से छूट जाते हैं।' यह जैनियों की मुक्ति है।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थप्रकाश के 12वें समुल्लास इस प्रकार समीक्षा की है—

चाहे वह शिला 45 लाख से दूनी 90 लाख कोश की होती तो भी वे मुक्त बन्धन में हैं, क्योंकि उस शिला वा शिवपुर के बाहर निकलने से उनकी मुक्ति छूट जाती होगी और सदा उसमें रहने की प्रीति और उससे बाहर जाने में अप्रीति भी रहती होगी। जहाँ अटकाव युक्त प्रीति और अप्रीति है, उसको मुक्ति क्योंकर कह सकते हो? मुक्ति तो दुःखों से छूटने का नाम है, बन्धन का नाम नहीं। जैनियों की मुक्ति तो एक प्रकार का बंधन है। ये जैनी मुक्ति के विषय में भ्रम में फंसे हैं। यह सच है कि बिना वेदों के यथार्थ बोध के मुक्ति के स्वरूप को नहीं समझ सकते।

क्रमशः

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के नवनिर्वाचित पदाधिकारी एवं सदस्यगण

रामपाल आर्य
प्रधान

कन्हैयालाल आर्य
उपप्रधान

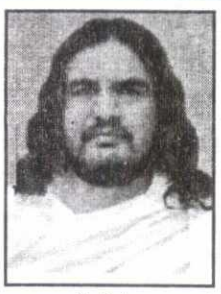
आचार्य योगेन्द्र आर्य
मन्त्री

उमेद शर्मा
उपमन्त्री

सुमित्रा आर्या
कोषाध्यक्ष

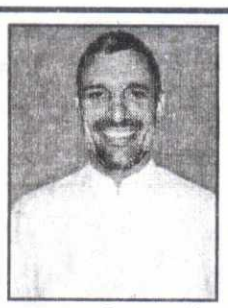
आजादसिंह आर्य
पुस्तकाध्यक्ष

आचार्य सर्वमित्र
अन्तरंग सदस्य

डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार
अन्तरंग सदस्य

आचार्य ऋषिपाल
अन्तरंग सदस्य

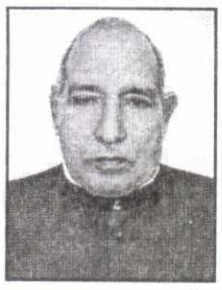
यशपाल आचार्य
अन्तरंग सदस्य

कमलसिंह आर्य
अन्तरंग सदस्य

वीरेन्द्र आर्य
अन्तरंग सदस्य

कृष्ण कुमार
अन्तरंग सदस्य

रमेश आर्य
अन्तरंग सदस्य

रोशनलाल आर्य
अन्तरंग सदस्य

जगदीश सींवर
अन्तरंग सदस्य

राधाकृष्ण आर्य
अन्तरंग सदस्य

यादविन्द्र बराड़
अन्तरंग सदस्य

वेदप्रकाश आर्य
अन्तरंग सदस्य

श्रीओम्
अन्तरंग सदस्य

सतीश कुमार बंसल
अन्तरंग सदस्य

www.thearyasamaj.org

स्वास्थ्य-चर्चा... प्रकृति का सर्वोत्तम उपहार : गन्ना

गतांक से आगे....

(3) पागलपन पर-मस्तिष्क रोग के निवारण में विटामिन 'बी' की जरूरत पड़ती है और गुड़ तथा गन्ने के रस में यह बहुतायत से पाया जाता है। गर्म और खुश्क गोलियां खिलाकर विक्षिप्त व्यक्ति को अधिक विक्षिप्त (पागल) न करें और उसे गन्ना चूसने को दें, गन्ने का रस पीने को दें। गन्ने के रस में चावल डालकर खीर बनाकर दें। मिश्री पीसकर अदरक रस मिलाकर दें ताकि रोगी शान्त, सहज होकर सही ढंग से सोच समझ सके। पागलपन की रोकथाम में सफेद चीनी (शक्कर) को निषिद्ध वस्तुओं में स्वीकारना चाहिए।

(4) कब्ज गैस, अफरा और बदहजमी पर-गन्ना रस में नींबू का रस मिलाकर पीना सर्वोत्तम औषधि का काम करता है। पेट की जलन, भोजन के प्रति अरुचि आदि रोगों में यह मधुर मनभावन व लाभकारी औषधि है।

(5) बलगम (कफ) के लिये-वैद्यक ग्रन्थ 'भावप्रकाश' में स्पष्ट लिखा है कि गुड़ को अदरक के रस के साथ लिया लाये तो कफ नष्ट हो जाता है। गुड़ पीसकर अदरक का रस मिला दीजिये, फिर सुबह-शाम चाटिये, रात्रि में भी एक बार लें, पूरा लाभ प्राप्त होगा।

(6) आँखें आने (दुखने पर)-तीस ग्राम गुड़ को एक छोटी गिलास पानी में घोल दें। फिर मिट्टी के कुल्हड़ में इसे भर दें, कुल्हड़ के प्राप्त न होने पर स्टील के लोटे में भर दें और सूती कपड़े से मुंह बांधकर (कपड़ा इकहरा लें) और रात्रि में छत पर या खुले में रख दें। प्रात: इसे छानकर रोगी को पिला दें। आँखों को आराम आ जायेगा, खटकना, दर्द होना बन्द हो जाएगा, ऐसा दो-तीन दिन करें। यह अनुभूत प्रयोग है।

(7) खूनी दस्त होने पर-गन्ना रस में अनार का रस मिलाकर पीने से आराम आ जाता है। ऐसा प्रयोग दिन में तीन बार (सुबह-दोपहर व शाम तक) करें।

(8) पेशाब खुलकर आने के लिए-गन्ने का रस 'मूत्रल' है और इसके पीने से मूत्राशय के बहुत से विकार दूर हो जाते हैं। एक गिलास ताजा गन्ना रस में दो चम्मच आंवले का रस और दो चम्मच शहद मिलाकर पीने से पेशाब खुलकर बिना तकलीफ के आने लगता है।

(9) हिचकी पर-पहले गुड़ की जरा-सी ढेली पानी में घोलिये तब सोंठ पिसी हुई उस पानी में घोलिये और इसे नसवार की तरह सूंघिये। सोंठ के अभाव में अदरक का रस मिलाकर सूंघिये। अगर ठण्डा मौसम हो तो पिसी हुई सोंठ को गुड़ में मिलाकर नस्य लीजिये। हिचकी बन्द करने में यह अनुभूत प्रयोग है। अगर तेज मसाले आदि से हिचकी लग गई हो तो जरा-सा गुड़ दांतों में दबाकर दो-चार घूंट पानी के पी जाइये। यदि लगातार हिचकी पर हिचकी चल रही हो तो गन्ना रस में इलायची पीसकर मिलाने के पश्चात् रस पीने से लाभ मिलता है।

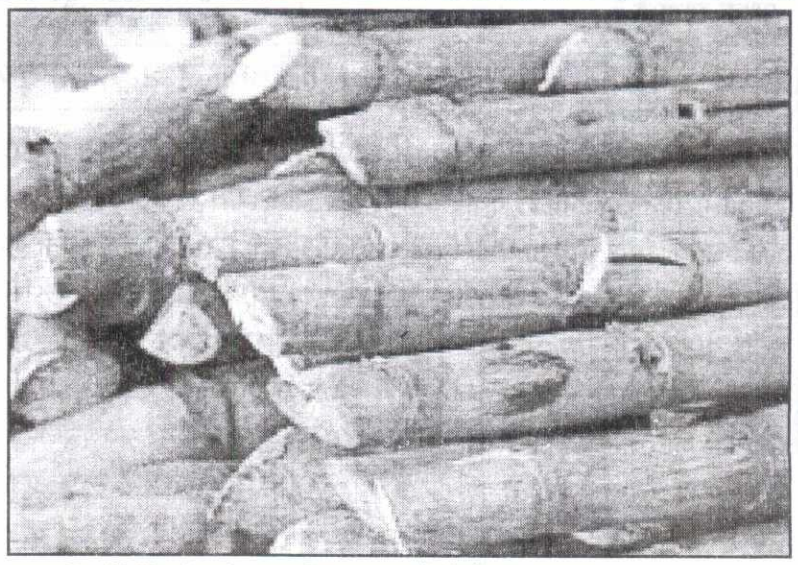

(10) नाक से खून बहने पर-नासा छिन्द्रों में गन्ने की रस की चार-चार बूंदें टपकाने से खून बहना बन्द हो जाता है, इसके बाद गन्ना रस में नींबू निचोड़कर एक-एक घूंट पीयें, नकसीर में बर्फ भी हितकारी है। अनार का रस भी पिलाया जा सकता है। सिर पर ठण्डा पानी भी थपथपाना चाहिए। फिर रोगी को बिना सिरहाने के सुला देना चाहिए। गर्मी का असर शरीर से निकलते ही नकसीर की शिकायत भी जाती रहती है।

(11) गर्मी से बचाव-गर्मी में जब भी बाहर जायें एक छोटा प्याज जेब में डाल लें और एक गिलास गन्ना रस जिसमें थोड़ा अदरक का रस व थोड़ा नींबू का रस मिलाकर पीएं। रस न मिलने पर ठण्डे पानी में गुड़ घोलकर शर्बत बना लें और पी लें इससे 'लू लगने' का खतरा नहीं रहता है तथा गर्मी और गर्म हवा के झोकों से शरीर को हानि नहीं पहुंचती है। 'लू' के कारण अधिकतर मौतें बिहार व उत्तर प्रदेश में होती हैं।

(12) छोटे बच्चों के पेट में कीड़े होने पर-भोजन से पहले एक छोटी गिलास करीब सौ ग्राम गन्ना रस पिलाने से पेट के कीड़े दस्त के जरिए बाहर निकल जाते हैं। ऐसा तीन दिन तक सुबह-सुबह करना चाहिए।

(13) गर्भ निरोध के लिए-अगर परिवार नियोजन की इच्छा हो तो गुड़ इसमें भी मदद करता है। मासिक धर्म निपटने के बाद यदि महिलाएं पचास ग्राम गुड़ खाकर ताजा पानी पी लें और दो सप्ताह लगातार खाती रहें तो गर्भाधान नहीं होगा।

इसके साथ गुप्तांगों में निबोरी (नीम के बीजों) का तेल अन्दर तक लगा लेने (चुपड़ लेने) से गर्भ ठहरने का बिल्कुल भय नहीं रहता। लूप, निरोध आदि के नकली आवरण चढ़ाये बिना परिवार सीमित रखने का यह आसान और हानि रहित तरीका है।

(साभार-वनौषधिमाला)

दाद-खुजली के घरेलू उपचार

दाद-खुजली ऐसे चर्मरोग हैं कि समय रहते इसका इलाज नहीं किया गया तो यह फैलता जाता है। एलोपैथी मलहम बाजार में उपलब्ध हैं, लेकिन इससे लाभ नहीं होता। यह सभी भुक्तभोगी जानते हैं परन्तु यदि घरेलू उपचार जो कि घर में ही कर सकते हैं, घर में ही किए जायें तो आशातीत सफलता मिलती है।

दाद-इस रोग में शरीर पर छोटे-छोटे दाने निकल आते हैं जो गोल चक्रों में होते हैं। यह एक फंगस के कारण होने वाला त्वचा रोग है। त्वचा में उभरे इन गोल चक्रों में खुजली एवं सूजन पैदा हो जाती है जो कि खीझ पैदा करती है। इस रोग से बचाव के लिए धूल-मिट्टी में काम करने, अधिक पसीने के बाद स्नान अवश्य करना चाहिए। नाइलॉन व सिंथेटिक वस्त्रों की जगह सूती वस्त्रों का प्रयोग करें तथा अधोवस्त्र हमेशा साफ-सुथरे रखें। उपचार में निम्न प्रक्रिया अपनाएं—

- नीम के पत्तों को पानी में उबालकर स्नान करना चाहिए।
- काले चनों को पानी में पीसकर दाद पर लगायें। दाद ठीक हो जायेगा।
- शरीर के जिन स्थानों पर दाद हों, वहां बड़ी हरड़ के सिरके में घिसकर लगायें।
- छिलके वाली मूंग की दाल पीसकर इसका लेप दाद पर लगायें।
- नौसादर को नींबू के रस में पीसकर दाद में कुछ दिनों तक लगाने से दाद दूर हो जाता है।

खुजली-एक विशेष प्रकार की सूक्ष्म परजीवी के त्वचा पर चिपक कर खून चूसने से उस जगह पर छाले व फुंसियां निकल आती हैं। इससे अत्यधिक खुजली पैदा होती है। खुजल एक ऐसा चर्म रोग है जो आनन्द देता है खुजाने में। जब तक त्वचा जलने न लगे तब तक खुजलाहट शान्त नहीं होती। इस रोग में सबसे अधिक शरीर की सफाई पर ध्यान देना चाहिए। चूंकि यह रोग एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक शीघ्र पहुंचता है, इसलिए संक्रमित के कपड़े अलग रखकर उनकी गरम पानी से धुलाई करनी चाहिए। उपचार यह हैं—

- आंवले की गुठली जलाकर उसकी भस्म में नारियल का तैल मिलाकर मलहम बनायें और खुजली वाले स्थान पर लगाने से खुजली दूर होती है।
- नीम की पत्तियों को उबालकर खुजली वाले स्थान को धोएं।
- काली मिर्च तथा गंधक को घी में मिलाकर शरीर पर लगाने से खुजली दूर होती है।
- टमाटर का रस एक चम्मच नारियल का तैल दो चम्मच मिलाकर मालिश करें और उसके आधे घंटे बाद स्नान करें। खुजली में राहत मिलेगी।

दाद-खाज त्वचा के ऐसे रोग हैं कि लापरवाही बरतने से हमेशा के मेहमान बन जाते हैं। स्वमूत्रा चिकित्सा से भी इसका लाभप्रद इलाज होता है बशर्ते किया जाए। छ: दिन का पुराना स्वमूत्र दाद खुजली पर लगाने से और स्वमूत्र की पट्टी रखने से चमत्कारी लाभ मिलता है। **आर.डी. अग्रवाल 'प्रेमी'**

www.thearyasamaj.org

अमर शहीद, क्रान्तिकारी नेता पं० रामप्रसाद बिस्मिल

ग्वालियर राज्य में तोमर घाट में चम्बल नदी के किनारे बिस्मिल के दादा रहते थे। वे शाहजहांपुर में आकर रहने लगे। वहीं उनके पुत्र मुरलीधर के घर में ज्येष्ठ शुक्ला 11 सम्वत् 1954 में एक बालक ने जन्म लिया, उस बालक का नाम ''रामप्रसाद'' रखा गया। जब आठ वर्ष के हुए तब आपको पिता जी ने हिन्दी के सामान्य अक्षरों का ज्ञान कराया, उर्दू पढ़ाने के लिए एक मौलवी साहब के पास भेजते थे। रामप्रसाद बाल्यकाल में बहुत उद्दण्ड थे, थोड़े दिन के बाद पैसों की चोरी भी करने लग गये तथा उपन्यास ग्रन्थ उन पैसों से खरीद खरीद कर पढ़ा करते थे, भांग भी पीने लग गये। एक दिन की बात है भांग पीकर सन्दूक से पैसे निकाल रहे थे, बेहोशी के कारण ट्रंक की आवाज होगई। माता जी ने उस आवाज को सुन लिया। उस दिन आप चोरी करते हुए पकड़े गये और बहुत से रुपये तथा उपन्यासों की पुस्तकें प्राप्त हुई। उस दिन आपको बहुत दण्ड दिया गया।

एक दिन आपके गाँव में आर्यसमाज के स्वामी सोमदेव जो आये। उनके पास आपका आना जाना होने लगा। आपके जीवन ने पलटा खाया, आप आर्यसमाजी बन गये और ब्रह्मचर्य का पालन करने लगे। कुछ दिनों में आपने सब दुर्व्यसनों को छोड़ दिया। महात्मा, संन्यासियों के उपदेश रुचि से सुनने लग गये। इससे देश सेवा का भाव मन में उत्पन्न हो गया, और देश सेवा का व्रत ले लिया, तब से शरीर को सुदृढ़ बनाने का प्रयत्न करने लग गये। प्रतिदिन नियमपूर्वक व्यायाम, यज्ञ करते थे, इसके फलस्वरूप आप थोड़े ही दिनों में असाधारण शक्तिशाली हो गये। साठ-साठ मील पैदल चले जाते थे, तब भी हिम्मत न हारते थे। व्यायाम और प्राणायाम इतना करते थे कि देखने वाले दंग रह जाते थे और व्याख्यान बहुत जोशीला दिया करते थे। जब आप अंग्रेजी की नवीं कक्षा में पढ़ते थे तब कुछ स्वदेशी पुस्तकों का अवलोकन किया, उससे स्वदेश प्रेम उत्पन्न हुआ। शाहजहाँपुर में सेवा समिति की नींव पं० श्रीराम बाजपेयी जी ने डाली। उसमें ये बड़े उत्साह से काम करते थे। आपके हृदय में दूसरों के प्रति सेवा का भाव उत्पन्न हुआ, समझने लग गये कि वास्तव में देशवासी बड़े दुखी हैं, उसी वर्ष कांग्रेस का उत्सव था, ये भी उसमें सम्मिलित हुए। उसमें निश्चय हुआ कि देश के लिये विशेष कार्य होना चाहिये। भारतवासियों के दु:ख तथा दुर्दशा की जिम्मेवारी गवर्नमेंट पर है। अत एव सरकार को पलटना चाहिये, आपने भी इन विचारों का अनुमोदन किया। कांग्रेस के उत्सव में महात्मा तिलक के पधारने की खबर थी, इस कारण गर्म-दल के व्यक्ति भी आये हुए थे। कांग्रेस के सभापति का स्वागत बड़ी धूमधाम से हुआ। दूसरे दिन लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की स्पेशल गाड़ी आने का समाचार मिला, बहुत जनता वहाँ पर विद्यमान थी। स्वागत कारिणी समिति के सदस्यों ने निश्चय किया कि शहर में उनकी सवारी न निकाली जाये, जिसका कारण यह था कि वे जानते थे कि उनका स्वागत कांग्रेस के प्रधान से भी अधिक होगा, तब रामप्रसाद जी से तथा उनके साथियों से यह सहन न हो सका, सबने मिलकर निश्चय किया कि उनकी सवारी शहर में से निकाली जायेगी। जब वे स्टेशन पर आये तब उन्हें मोटर में बिठाकर शहर से बाहर ही ले जाना चाहते थे तो रामप्रसाद जी तथा उनके साथी गाड़ी के आगे लेट गये। बहुत कहने पर भी वे न माने, और भी मनुष्य गाड़ी के आगे लेट गये। एक युवक ने मोटर का टायर काट दिया और लोकमान्य तिलक को घोड़े की गाड़ी में बिठाकर हाथों से गाड़ी को खींचना शुरू किया। इस प्रकार लोकमान्य का स्वागत बड़ी धूमधाम से हुआ।

कांग्रेस के उत्सव के अवसर पर ज्ञात हुआ कि एक गुप्त समिति है जिसका मुख्य उद्देश्य क्रान्तिकारी आन्दोलन में भाग लेना है। इस बात को सुनकर आप उस समिति के सदस्य बन गये। रुपयों की समिति में आवश्यकता थी तो आपने एक पुस्तक प्रकाशित की, उससे धन प्राप्त किया। पुस्तकें सब बिकने भी न पाईं थीं कि देशवासियों के लिए एक सन्देश प्रकाशित किया और सर्वत्र पर्चे बाँट दिये गये, क्योंकि पं० गेंदालाल जी अपने दल के सहित ग्वालियर में गिरफ्तार हो गये थे। उनको छुड़ाना था। इसको देखकर सरकार ने पुस्तक जब्त कर ली।

आन्दोलन के लिये हथियार चाहियें, हथियारों के लिये रुपये। अब चिन्ता हुई कि पैसे हथियारों के लिये कहाँ से लाये जायें,। इधर-उधर से पैसे बहुत कठिनता से प्राप्त किये तथा उनसे हथियार खरीदे। हथियार भी अच्छे नहीं मिले और पैसे भी अधिक आपसे ले लिये, क्योंकि हथियारों की आप को जानकारी नहीं थी।

एक दिन की बात है कि आपको एक खुफिया पुलिस ने आकर कहा कि आओ मैं बहुत अच्छे हथियार दिलाऊं। उसके साथ चल पड़े, खुफिया पुलिस इन्स्पेक्टर के घर पकड़वाने के लिए ले गया, आपको शंका हुई कि यह कहाँ ले जाता है। जब इन्स्पेक्टर के घर के सामने पहुँचे उस समय इन्स्पेक्टर घर पर न थे, तब आपको किसी से पूछने पर पता चला कि यह घर तो इन्स्पेक्टर का है तब उससे आंख बचाकर चलते बने। फिर अपना रहने का स्थान बदला, तथा जिससे आप हथियार खरीदते थे उसका भी खुफिया पुलिस ने पता चला लिया। उस समय आप लोगों के पास दो राइफलें, चार रिवाल्वर तथा दो पिस्तौल खरीदे हुए मौजूद थे। उस दिन एक मनुष्य हथियार लेकर जाने वाला था। इस बात का खुफिया पुलिस को पता चल गया, उन्होंने सर्वत्र तार कर दिये तथा सारी रेलगाड़ी की तलाशी ली गई, उस दिन आप गिरफ्तार हो जाते परन्तु पुलिसियों की असावधानी के कारण बच गये।

इधर आप अपने काम में व्यस्त थे। मैनपुरी के सदस्य ने एक आदमी से रुपयों की आवश्यकता की पूर्ति के लिये कहा कि आप किसी के यहाँ डाका डलवाओ, उसके मना करने पर, उसने मारने की धमकी दी। उसने पुलिस को सूचना दे दी, मामला खुल गया, मैनपुरी में गिरफ्तारियां आरम्भ हो गईं। उसमें आपके वारण्ट जारी हो गये। उन्हीं दिनों दिल्ली में कांग्रेस की बैठक होने वाली थी। आपने एक पुस्तक लिखी थी वह यू० पी० सरकार ने जब्त कर ली थी, वहां गये तथा पुस्तकें बेचीं, पुलिस को पता चलने पर पुस्तकें लेकर शाहजहांपुर में आ गये, वहां पर भी पुलिस ने पकड़ना शुरू कर रखा था। शाहजहांपुर से चलकर दूसरे शहर में ठहरे। रात्रि के समय में मालिक ने बाहर से ताला डाल दिया। ग्यारह बजे आपका एक साथी आया। साथी को ताला देखकर सन्देह हो गया। वहां सबके सब दीवार के ऊपर से कूद कर चल दिये। अंधेरी रात थी, आप सब थोड़ी दूर गये थे कि अकस्मात् एक आवाज आयी कि ठहरो, नहीं तो गोली मारते हैं। सबके सब खड़े हो गये, दरोगा तथा सिपाही बन्दूक हाथ में लिये आपके पास आ गये। आपसे पूछा कौन हो, और कहां जा रहे हो? आप ने उत्तर दिया विद्यार्थी हैं, स्टेशन पर जा रहे हैं। दरोगा को शक हुआ क्योंकि गाड़ी पाँच बजे आती थी, तब दो बजे थे। आप सब लोगों के चेहरे पर रौनक देखकर शक जाता रहा, अन्यथा सब उस दिन गिरफ्तार हो जाते।

आप प्रयाग में धर्मशाला में निवास करते थे। वहां पर एक दिन संध्या कर रहे थे तो एक व्यक्ति ने आकर आपके ऊपर तीन वार किये, परन्तु आपको वार न लगे, वार करने वाला, पहले आपका दुश्मन था, परन्तु बीच में मित्रता हो गई थी, आपको इस बात को देखकर बहुत प्रसन्नता हुई कि दो गज के फासले से वार किया, परन्तु आपको न लगा। इसका विचार करके, गद्गद् होकर परमात्मा का स्मरण करने लग गये। प्रसन्नता में आपको मूर्च्छा आ गई, यदि उस समय कोई पास होता तो मृत्युलोक को पहुंचा सकता था।

आपको पता चला कि मैनपुरी में होने वाले षड्यन्त्र के सभी गिरफ्तार छोड़ दिये गये हैं और आपके भी वारण्ट वापिस ले लिये गये। तब आप शाहजहांपुर में आ गये। घोषणा के पश्चात् पुलिस का बड़ा प्रकोप था, कोई मनुष्य आपस में नमस्ते तक न कर सकता था, बात करने की तो बात ही क्या।

इसके पश्चात् आप खेती का काम करने लग गये। खेती आप बहुत अच्छी प्रकार से किया करते थे। काम को देखकर कोई कह नहीं सकता था कि यह शहर का रहने वाला है।

जिनको आप आदर की दृष्टि से देखते थे उन्होंने आपको आकर कहा कि फिर क्रान्तिकारियों का संगठन करें परन्तु आपने मना कर दिया। साथियों के अधिक कहने पर स्वीकार

क्रमशः पृष्ठ 6 पर.....

www.thearyasamaj.org

अमर शहीद, क्रान्तिकारी.... पृष्ठ 5 का शेष.....

कर लिया। आप को काम यह सौंपा कि दल की देखभाल करें। कुछ मनुष्य दल में खराब भी आ गये। एक ने अपने पास वेश्या ला रखी थी, उसकी ताड़ना की जिससे कि वह रुष्ट हो गया। तभी एक आदमी पकड़ा गया, उसने कइयों के नाम बता दिये, जिससे दल के मनुष्य पकड़े गये। इसी बीच में कुछ महानुभावों ने कुछ नियमादि बनाकर दिखाये, उसमें एक यह भी नियम था कि जो व्यक्ति समिति का काम करे उसे मासिक व्यय समिति की ओर से दिया जाय। आपने इस नियम को अनिवार्य रूप से मानना अस्वीकार कर दिया। आप यहाँ तक सहमत थे कि जो व्यक्ति सर्वप्रकारेण समिति का काम करे उसको गुजारा मात्र समिति की ओर से दिया जा सकता है। जो व्यक्ति कोई व्यवसाय करते हैं उनको कुछ भी समिति की ओर से न दिया जाये। जब आपने उनके विपरीत नियम न माने तब आपको मारने का षड्यन्त्र रचा गया। आपको वे मार देते परन्तु एक के हृदय में दया आ गई तथा आपके पास आकर मारने के षड्यन्त्र का ज्ञान कराया। उससे आप सतर्क हो गये। आप को इस बात को सुनकर बड़ा दु:ख हुआ कि जिनको मैं पिता के समान मानता हूं वे मेरे साथ कैसा षड्यन्त्र कर रहे हैं। आपको मारने में मुख्य तीन आदमी थे।

फिर आप आकर नौकरी करने लग गये, क्योंकि माता-पिता को धन की बड़ी आवश्यकता थी। थोड़े ही दिनों में आपने पिताजी को धन की कमी न रहने दी। फिर आपको पता चला कि संयुक्त प्रान्त में क्रान्ति आरम्भ हो गई है, आप पहले निश्चय कर चुके थे कि मैं क्रान्ति में भाग न लूँगा, परन्तु दिल की आग ने आपको निश्चल न बैठने दिया। आपने फिर क्रान्तिकारियों का एक संगठन बनाया, बहुत आपत्तियाँ आईं, कभी-कभी तो यहाँ तक कि रोटी भी न प्राप्त हुई। रुपयों की बहुत आवश्यकता थी, रुपया कहीं से मिलता न था तो फिर विचार आया कि डकैती की जाय, किसी एक व्यक्ति को दु:ख न दिया जाय, अत: सरकारी खजाने पर डकैती की जाये।

उसी समय से आपके अन्दर यह धुन सवार हो गई। डकैती का समय तथा स्थान निश्चित किया, 9 अगस्त 1925 ई० को सन्ध्या के आठ बजे की गाड़ी में दस नवयुवक बैठ गये। गाड़ी हरदोई से लखनऊ जा रही थी। एकाएक काकोरी तथा आलमनगर के बीच में 52 नम्बर खम्बे के पास दूसरे दर्जे से जंजीर खेंची गई, गाड़ी खड़ी हो गई। एकदम दस नवयुवक उतरे और सबको कह दिया कि कोई मुसाफिर गाड़ी से न उतरे, हम सरकारी खजाना लूटेंगे, किसी यात्री को कोई कुछ न कहेगा। दो मनुष्य गाड़ी के दोनों तरफ पहरा देने लग गये, जिससे कोई गाड़ी से न उतरे। साथ-साथ थोड़ी-थोड़ी देर में गोली चलती थी, इधर गार्ड को पिस्तौल दिखाकर कह दिया कि जमीन पर सीधा लेट जा। तिजोरी बाहर निकाली गई, तिजोरी पर घन मारा परन्तु टूटी नहीं। अन्त में अशफाक ने बहुत परिश्रम से उस तिजोरी को तोड़ा, इसी बीच में एक मनुष्य गाड़ी से उतरकर दूसरे डिब्बे में जा रहा था, तो वह गोली का शिकार हो गया। लगभग आध घण्टे के बाद में ये दस मनुष्य धन लेकर चले गये। उस डकैती में बहुत धन प्राप्त हुआ, सारा कर्जा चुका दिया तथा हथियार भी मोल ले लिये, काम अब अति तीव्र वेग से चलने लगा। 25 दिसम्बर को गिरफ्तारियाँ प्रारम्भ हो गईं, 25 दिसम्बर की रात्रि को आप एक मित्र के यहां जा रहे थे, रास्ते में खुफिया पुलिस का सिपाही मिला। आपने उसकी कोई चिन्ता न की, रात्रि को निश्चिन्त होकर सो गये। प्रात:काल चार बजे शौचादि क्रिया के लिये जा रहे थे, दरवाजे पर बन्दूक के शब्द सुनाई दिये। तभी आप समझ गये कि पुलिस आ गई, दरवाजा खोल दिया, पुलिस अफसर ने आकर आपको गिरफ्तार कर लिया। तलाशी ली गई, दुर्भाग्यवश एक पत्र भी प्राप्त हो गया, जेल में भेज दिये गये, वहां पर भी खुफिया पुलिस का प्रबन्ध कर दिया गया, आपको चिन्ता इस बात की थी कि कभी क्रान्ति कम न हो जाये, जब कोई मिलने आता था तब आप पूछते थे कि काम ठीक चल रहा है या नहीं? जेल के अन्दर आपके पास खुफिया पुलिस आती थी, और आपसे जिला कलेक्टर मिले, कहने लगे फाँसी होगी, बचना है तो बयान दे दो। आप उस समय चुप रहे। तत्पश्चात् बात करते-करते कहा 'यदि बंगाल का कुछ 'परिचय देकर बयान दे दो तो आपको थोड़ी सी सजा कर देंगे, तथा 15000) पारितोषिक दिया जावेगा'। परन्तु कुछ न बताया। इसी प्रकार बहुत बार आये परन्तु परेशान होकर चले जाते थे। मुकद्दमा चला, मुकद्दमे में पैसों की आवश्यकता थी, पैसों की बहुत कमी थी, और न ही कोई गवाह बना। उधर पुलिस की अफसर अत्यधिक सहायता करते थे। अन्त में 19 दिसम्बर 1927 को फांसी की आज्ञा सुना दी गई। बहुत प्रयत्न किये गये परन्तु फांसी न हटी।

फांसी से पहले माता पिता तथा उनका छोटा भाई मिलने के लिये गये, माताजी को देखकर बिस्मिल की आंखों में आंसू आ गये। उस समय माता के कहे वे शब्द ध्यान रखने योग्य हैं, ऐसी ही माता इस संसार में हीरा उत्पन्न करके संसार को स्वतन्त्र बनाती हैं। "मैं तो समझती थी तुमने अपने ऊपर विजय पाई है किन्तु यहां तो तुम्हारी कुछ और ही दशा है। जीवन पर्यन्त देश के लिए आंसू बहाकरअब अन्तिम समय में तुम मेरे लिये रोने बैठे हो, इस कायरता से क्या होगा, तुम्हें वीर की भांति हँसते हुए प्राण देते देखकर मैं अपने आपको धन्य समझूँगी। मुझे गर्व है कि इस गए बीते जमाने में मेरा पुत्र देश की वेदी पर प्राण दे रहा है। मेरा काम तुम्हें पाल कर बड़ा करना था इसके बाद तुम देश की चीज थे और उसी के काम आ गए। मुझे इसमें तनिक भी दु:ख नहीं है।" उत्तर में कहा 'माताजी तुम तो मेरे हृदय को भली-भांति जानती हो। क्या तुम समझती हो कि मैं तुम्हारे लिए रो रहा हूँ अथवा इसलिये रो रहा हूँ कि मुझे कल फांसी हो जायेगी। यदि ऐसा है तो मैं कहूँगा कि तुमने जननी होकर भी मुझे समझ न पाया, मुझे अपनी मृत्यु का तनिक भी दु:ख नहीं है। हां यदि घी को आग के पास लाया जायेगा तो उसका पिघलना स्वाभाविक है। बस उसी प्राकृतिक सम्बन्ध से दो चार आंसू आ गए। आपको मैं विश्वास दिलाता हूं कि अपनी मृत्यु से बहुत सन्तुष्ट हूं। इन बातों को सुनकर जेल के सब मनुष्य दंग रह गये।

19 दिसम्बर को प्रात:काल साढे 6 बजे फांसी है, उसी दिन प्रात:काल तीन बजे उठते हैं। शौच स्नान आदि नित्य कर्म करके यज्ञ करते हैं, फिर ईश्वर स्तुति करके फाँसी के तख्ते पर यह कहते हुए लटक जाते हैं कि "मैं ब्रिटिश साम्राज्य का नाश चाहता हूं।"

बिस्मिल जी का यज्ञकुण्ड, चाकू, लाठी, मृगचर्म गुरुकुल झज्जर के संग्रहालय में हैं। स्वामी ओमानन्द जी को ये वस्तुयें बिस्मिलजी की बहन शास्त्री देवी ने दी थी।

(सुधारक से साभार)

सूचना

सभी आर्यसमाजों को, आर्य शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि अपने सभी प्रकार के प्रचार कार्यक्रमों का विवरण 'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक पत्र में छापने के लिए भेजें। साथ ही विद्वानों, लेखकों, बुद्धिजीवियों से आग्रह है कि वे अपने लेख, कविता आदि निम्न ई-मेल अथवा पते पर भेजें।

सम्पादक 'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001
E-mail : aryapsharyana@yahoo.in

जल अमूल्य निधि है, इसका सोच-समझकर प्रयोग करें, क्योंकि जल है तो कल है।

शोक-समाचार

ग्राम कंवारी जिला हिसार के स्वतंत्रता सेनानी, पूर्व कैप्टन श्री रामेश्वर जी की धर्मपत्नी परमेश्वरी देवी का निधन 12.12.2016 को 7 बजे हो गया। उनकी आयु 78 वर्ष थी। वे एक आदर्श महिला थी। दिनांक 13.12.2016 को 11 बजे दाह-संस्कार करवाया गया। मुखाग्नि उनके पोते करण ने दी। इस दाह संस्कार में प्रवीण तहसीलदार हांसी, महात्मा अत्तरसिंह स्नेही, शमशेर आर्य पूर्व जिला पार्षद, पूर्व सरपंच धूपसिंह आर्य, मा० शेरसिंह प्रधान किसान सभा पूर्व कर्मचारी संघ, कपूरसिंह पूर्व एससी बिजली विभाग, डॉ. धर्मपाल सिरसाना आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए। परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की गई तथा उनके परिवार को दु:सह पीड़ा को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की गई।

—वानप्रस्थ महात्मा अत्तरसिंह स्नेही, नलवा (हिसार)

www.thearyasamaj.org

पापों से छुटकारा और..... प्रथम पृष्ठ का शेष.....

'स्व=प्राकृतिक (ईश्वरीय) नियम, उसके आधीन सकल ऐश्वर्य है तथा 'सो आप कृपा से इत्यादि वाक्य में कृपा से' (कृपया) पद भी पूर्वोक्त नियम का ही बोधक है। किसी को ऐश्वर्य देने और न देने के विषय में ईश्वरीय नियम क्या है? इस विषय में आर्ष वचन है। **'न ऋते श्रान्तस्य सयाय देवाः'। 'इन्द्र इच्चरतः सखा।'** इत्यादि। अर्थ-जब तक मनुष्य किसी प्रकार के ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिये पूर्ण (शक्तिभर) परिश्रम करके सर्वथा श्रान्त (थका हुआ) नहीं हो जाता, तब तक परमदेव परमात्मा उसकी मित्रता के लिए अभिमुख नहीं होता अर्थात् उसको मनोवाञ्छित फल नहीं देता। इन्द्र=ऐश्वर्य का दाता परमेश्वर परिश्रम करने वाले का ही मित्र है, आलसी, प्रमादी का नहीं। इत्यादि आर्ष वचनों को जानता हुआ ही ज्ञानी भक्त ज्ञानूर्वक परिश्रम (उद्योग) करता है। उसको दृढ़ विश्वास है कि मेरा भगवान् न्यायकारी है, मेरे परिश्रम का फल अवश्य देगा। किंवा वस्तुतः चाहना (इच्छा करना) ईश्वर में घटता ही नहीं, क्योंकि ईश्वर तो सर्वज्ञ, सर्वव्यापक होने से आप्तकाम है। इच्छा करने वाला (अपूर्णमनोरथ) तो एक देशी (परिछिन्न) अल्पज्ञ अल्प शक्ति जीव है। उसी का गुण इच्छा है। ईश्वर में इच्छा गुण नहीं घट सकता। अतः 'जिसको चाहो' का अर्थ (अभिप्राय) होगा-'जिसको आप अधिकारी समझो' उसको ऐश्वर्य दीजिये। तृतीय शंका स्थल-जैसी आपकी इच्छा हो वैसा हमारे लिए आप कीजिये 'आ. द्वितीय प्रकाश' मन्त्र 13. समाधान-स्वकीय आयु प्राण इन्द्रिय, मन, बुद्धि, आत्मा आदि सर्वस्व का समर्पण करने के पश्चात् ही ये पूर्वोक्त शब्द ज्ञानी भक्त ने कहे हैं। यहाँ तो स्पष्ट रूप से इच्छा शब्द का अर्थ (भाव) न्याय (नियम) ही है, इन शब्दों से भक्त का भगवान् के न्याय के प्रति पूर्ण विश्वास ही प्रकट होता है। चतुर्थ शंका स्थल-आ.द्वि.प्र. 17वें मन्त्र में पठित 'अङ् घारि' और 'मार्जालीयः' इन पदों के अर्थ हैं यथा-'अङ्घारिः'=स्व-भक्तों का जो अघ (पाप) उसके अरि (शत्रु) हो। उस समस्त पाप के नाशक हो। मार्जालीय=पापों का मार्जन (निवारण) करने वाले आप ही हो। अन्य कोई नहीं। समाधान-जिस प्रकार बीज से वृक्ष पैदा होता है और वृक्ष से पुनः उसका उत्पादक बीज बन जाता है। उसी प्रकार कुसंस्कार से कदाचार (कुकर्म) होता है तथा उस कदाचार से पुनः तत्सदृश कुसंस्कार बन जाता है, उस कुसंस्कार से पुनरपि कदाचार होगा। यहाँ उसी कुसंस्कार आदि पाप को अंहस् (वा अघ) शब्द से कहा गया है। उस कुसंस्कार आदि पाप का शत्रु= शातयिता छिन्न-भिन्न करने वाला अर्थात् नाशक परमात्मा ही है, क्योंकि परमेश्वर की उपासना के बिना कुसंस्कार आदि पापों का सर्वथा नाश नहीं हो सकता। उसकी उपासना से ही पापकर्म मूल सहित छिन्न-भिन्न वा भस्मीभूत हो सकता है। इसीलिये स्वामी जी महाराज ने मन्त्रार्थ में-'उस (कारण कार्य रूप सूक्ष्म स्थूल) समस्त पाप के नाशक हो।' ऐसा कहा है। मार्जालीयः=पापों का मार्जन, शोधन, निवारण वा पृथक् करण का भाव यही है कि जो दुष्ट कर्म हम से हो जाते हैं, जिनको हम अपने लिए हानिकारक (अनिष्टकर) समझते हैं, परन्तु अज्ञान, प्रमाद आदि दोषों (कमजोरियों) के कारण हमसे बार-बार हो जाते हैं, उनको हमसे छुड़ाने वाले अर्थात् वे पाप कर्म हमसे फिर कभी न हो, ऐसा हम परमात्मा की सहायता (ज्ञान व शक्ति की प्राप्ति) से ही कर सकते हैं। यह भाव है। जो परमात्मा के न्याय पर पूर्ण विश्वास करके उसकी वेदोक्त आज्ञाओं का पालन करने वाला है, वही वास्तव में परमात्मा का भक्त है (उसको ही परमात्मा का भक्त कहना चाहिये) ऐसा भक्त यह कभी नहीं सोच सकता कि वेद (ईश्वरीय नियम) विरुद्ध आचरण तो करता रहूँ, परन्तु उसका कुफल मुझे न मिले अथवा उस कुफल को ईश्वर नष्ट कर देवे वा ईश्वर उसको नष्ट कर सकता है। पच्चम शंका स्थल-'हम सब मनुष्यों के भी पाप दूर करने वाले एक आप ही दयामय पिता हो, हे महा अनन्त विद्य! जो-जो मैंने विद्वान् वा अविद्वान् होके (अर्थात् जाने-अनजाने) पाप किया हो, उन सब पापों का छोड़ने वाला आपके बिना कोई भी इस संसार में हमारा कारण नहीं।' (आ.2, यप्र.मं. 18) इन वाक्यों में भी वही पाप क्षमा की बात कही गई है। समाधान-इस पूर्वोक्त (ऊपर लिखे) आर्य मित्र में छपे पाठ में तथा आर्याभिविनय ग्रन्थ के पाठ में कुछ अन्तर (मिलता) है। तद्यथा-'और हम सब मनुष्यों को भी पाप से दूर रखने वाले एक आप ही दयामय पिता हो, हे महाऽनन्तविद्य! जो-जो मैंने विद्वान् वा अविद्वान् होके पाप किया हो, उन सब पापों का छुड़ाने वाला आपके बिना कोई भी इस संसार में हमारा शरण नहीं है। इस हमारे अविद्या आदि सब पाप छुड़ा के शीघ्र हमको शुद्ध करो।' (आ. 2 यप्र. मं. 19वाँ) मनुष्यों के पाप दूर करने में और मनुष्यों को पाप से दूर रखने में किञ्चित अन्तर (मिलता) है। प्रथम में तो चोरी, जारी, शराब से खोरी, मिथ्या व्यवहार आदि बुरी आदतें-(कर्म) जिनमें मनुष्य ग्रस्त है, उनका छुड़ाना अभिप्रेत है। द्वितीय में जो बुरे कर्म (बुरी आदत) मनुष्य से अभी तक सम्बद्ध नहीं है, जिनमें फंसना समभव है, उनसे मनुष्य बचा रहे, कभी लिप्त न हो। यह भाव है। दोनों कार्य शुभ (अच्छे) हैं। दोनों के उपाय भी भिन्न-भिन्न हैं। आगामिनी (आने वाली) बुराई (पापकर्म) के कुफल (बुरा परिणाम) समझाकर अत्यन्त प्रत्यक्ष दिखाकर (उदाहरण द्वारा पुष्ट करके) पापकर्म से मनुष्य को दूर रक्खा जा सकता है तथा उस पापकर्म से विपरीत शुभ कर्म के अच्छे परिणाम उदाहरण आदि द्वारा समझाकर शुभ कर्म में प्रेरित करके भी पापकर्म से मनुष्य को पृथक् रखा जा सकता है। इसी प्रकार मनुष्य से समबन्ध पापकर्म को छोड़ने के भी अनेक उपाय हैं। कुछ मनुष्य प्रेमपूर्वक समझाने मात्र से ही बुराई करना छोड़ देते हैं और अच्छे कर्म करने लग जाते हैं। कुछ मनुष्य पापकर्म के कठोर भाषा में भयङ्कर परिमाण दिखाने से बुरा कर्म त्याग देते हैं। कुछ मनुष्य ताड़ना आदि कठोर उपायों का अवलम्बन (आश्रय) करने से बुरा कर्म छोड़ जाते हैं। पूर्वोक्त सभी उपाय पाप छुड़ाने वाले ही कहे जाते हैं। इसी प्रकार परमात्मा भी अनेक उपायों से यथायोग्य रीति से मनुष्यों को पापों से दूर रखता है और अनेक पापों को छुड़ाता है। आशा है मेरे पूर्वोक्त समाधानों से विचारशील स्वाध्यायशील श्री मान्यवर पं. मदनमोहन जी विद्यासागर आदि सज्जन महाशयों की कुछ सन्तुष्टि हुई होगी। आशा है इसी रीति से, इसी प्रकार के अन्य सन्देहास्पद स्थलों का भी समाधान विद्वान् जन कर लेवेंगे।

सदस्यता शुल्क भेजें

'आर्य प्रतिनिधि' सामाहिक के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि वे अपना वार्षिक शुल्क भी तत्काल भिजवाने की कृपा करें जिससे उनको 'आर्य प्रतिनिधि' नियमित प्राप्त होता रहे। शुल्क सम्बन्धी जानकारी के लिए व्यवस्थापक श्री रघुवरदत्त से मोबाइल नं० 07206865945 फोन नं० 01262-216222 से सम्पर्क करें।

-सम्पादक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में बिक्री हेतु निम्न साहित्य उपलब्ध हैं। कृपया इसका लाभ उठावें।

क्र०	पुस्तक का नाम		मूल्य
1.	प्रो० शेरसिंह : एक प्रेरक व्यक्तित्व	—	20-00
2.	धर्म-प्रवेशिका	—	10-00
3.	धर्म-भूषण	—	20-00
4.	वैदिक सिद्धान्त सार	—	20-00
5.	सत्यार्थप्रकाश	—	40-00
6.	वैदिक उपासना पद्धति	—	8-00
7.	पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती जीवन चरित	—	10-00
8.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	—	100-00
9.	हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणा का योगदान	—	30-00
10.	पं० गुरुदत्त विद्यार्थी जीवन चरित	—	25-00
11.	महर्षि दयानन्द तथा वेदों पर आक्षेपों का उत्तर	—	15-00
12.	आर्यसमाज का कायाकल्प कैसे हो?	—	10-00
13.	पंजाब का हिन्दी रक्षा आन्दोलन	—	100-00
14.	प्राणायाम का महत्त्व	—	15-00
15.	महाराणा प्रताप तथा उनके वंशज	—	10-50
16.	अमर हुतात्मा भगत फूलसिंह जीवनी	—	15-00
17.	अमर शहीद पं० रामप्रसाद 'बिस्मिल' जीवनी	—	30-00
18.	स्वामी श्रद्धानन्द जीवनी (कल्याण मार्ग का पथिक)	—	80-00
19.	सत्यार्थप्रकाश (बड़ी)	—	150-00

www.thearyasamaj.org

अजीब पहेली

❑ भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य

गतांक से आगे....

हमारा जीवन बहुत अंशों में सामाजिक सम्बन्धों तथा उनसे प्राप्त होने वाले सहयोग पर आधारित है। इन सामाजिक सम्बन्धों और सहयोग के बिना जीवन की कल्पना करना भी कठिन है। इसलिए परिवार में से किसी विशेष के अकस्मात् बिछुड़ जाने पर आश्रितों का जीवन भी अनेकधा अन्धकारमय एवं धूमिल हो जाता है। वह वियोग केवल तड़पाने वाला ही नहीं, अपितु अनेक बार असह्य भी हो जाता है। इसी भावना का कुछ अंश सती प्रथा के प्रचलित होने में आंशिक कारण कहा जा सकता है।

भारतीय समाज में इस अवसर पर प्रचलित रोने का विशेष रिवाज तथा वृद्ध अवस्था में भी पत्नी को दिए जाने वाले अनेक ताने, व्यंग्य विशेष चिन्तनीय हैं। चाहे पति-पत्नी की कितनी ही अधिक आयु क्यों न हो, पर पति के पहले मर जाने पर वह दुर्भाग्यशाली मानी जाती है। महीनों रोने का रिवाज चलता है। इसका पारिवारिक जीवन और बच्चों के पालन की दृष्टि से प्रतिकूल प्रभाव होता है। वियोग की वेदना से दु:ख और शोक के कारण रोना एक स्वाभाविक बात है तथा इससे दिल हलका भी हो जाता है, पर रिवाज का विशेषरूप विशेष चिन्तनीय है। पुनरपि ऐसी विषम परिस्थितियों में भी कुछ भारतीय महिलाओं ने जिस बुद्धिमत्ता और धैर्य का परिचय दिया, वह वस्तुत: इतिहास में अंकित करने योग्य है। ऐसी ही एक स्मरणीय घटना।

पिताजी ने एक बार बताया कि मैं कम से कम ऐसे सौ व्यक्तियों के दर्शन और साक्षात्कार करना चाहता हूँ जिन्होंने सौ वर्ष की आयु पूर्ण कर ली हो। ऐसे दीर्घजीवियों के दर्शन करके यह जानना चाहता हूँ कि उनकी दृष्टि से सफल जीवन और लम्बी उम्र का क्या रहस्य है? तथा विषम से विषम परिस्थितियों में से उन्होंने अपनी जीवन नौका को कैसे पार लगाया? अभी तक वे जितने भी व्यक्तियों से मिले हैं, उन सबके जीवन में सादा जीवन, शुद्ध आहार-विहार और शारीरिक श्रम का विशेष स्थान था और है। दीर्घजीवियों में से जिसके सबसे प्रथम दर्शन करने का अवसर उनको मिला, वह एक 105 वर्ष की कर्मठ महिला थी।

अपनी जिज्ञासा की निवृत्ति के लिए पिताजी ने इस महिला से कुछ प्रश्न पूछे जिनमें से एक यह भी था कि आपके इस लम्बे जीवन में कोई विशेष दु:खद घटना तो नहीं घटी? उस महान् महिला ने अपनी करुण कहानी को बताते हुए कहा कि मेरे जीवन में जो विशेष दुर्घटनाएं घटी हैं। प्रभु से प्रार्थना है कि वैसी किसी के जीवन में भी न घटे। क्योंकि—

अभी मेरी आयु तीस वर्ष के आस-पास ही हुई थी कि मुझ पर एकदम पहाड़ आ गिरा और मेरा सुहाग मुझसे छिन गया। भारतीय नारी के लिए इससे बड़ा दुर्भाग्य और क्या हो सकता है? और वह भी युवावस्था में। जब मेरी सारी दुनिया लुट गई, तो मैं दिनभर दहाड़ें मार-मार कर छाती-सिर पीट-पीटकर रोई, क्योंकि मुझे तब चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार ही दिख रहा था। उस पर इधर-उधर से आने वाली आवाजें जलती आग पर घी का काम कर रही थी। मैं जैसे-कैसे अपनी जिन्दा लाश ढो रही थी और बार-बार भगवान् से मौत मांग रही थी। एक रात को थोड़ी देर बाद अचानक मेरी नींद खुल गई और विचार उभरा, अब रोने से वे लौटकर नहीं आयेंगे, फिर रो-रोकर तू अपने आपको बेहाल क्यों कर रही है? कुछ धैर्य कर, इस तरह अपने आपको अव्यवस्थित कर लेने से और धैर्य छोड़ देने से इन बच्चों का क्या होगा? जिनकी अब सारी जिम्मेवारी तुझ अकेली के कंधों पर ही आ गई है। अब तो तुझ अकेली को ही इनके प्रति दोनों के कर्त्तव्य पूर्ण करने होंगे, क्या उनकी याद में बेचैन होकर उनकी इस अनमोल धरोहर के प्रति अधिक सजग होने की अपेक्षा केवल अपने आपको ही प्रमुखता देगी? तुझे अब इनके लिए जीना है, इनके प्रति दोनों के कर्त्तव्यों को एक साथ निभाना है। इन विचारों ने मेरे सामने जीवन का एक नया रूप ला दिया। प्रात: उठी, रात को अकस्मात् उभरे विचारों ने मेरे लिए कर्त्तव्य पथ निश्चित कर दिया था। जग दिखाई के लिए रिवाज को हर स्थिति में पूर्ण करना था। पर दिमाग बार-बार सचेत कर रहा था कि कहीं अपने कर्त्तव्यों को भूल न जाना। समय बीतता गया और जैसे-कैसे मेहनत करके धरोहर के प्रति कर्त्तव्य निभाने में जुट गई। इस कर्त्तव्य परायणता तथा समय ने धीरे-धीरे उस घाव को कुछ भर दिया पर भविष्य को पूरी तरह से किसने जाना है?

बड़ा बेटा जब कुछ पढ़कर मेरा हाथ बटाने के योग्य हुआ और मैंने सोचा चलो इतनी अधिक साधना के बाद ही जैसे-कैसे मेरे काले बादल कुछ तो दूर हुए। पर मेरी आशाओं का सहारा, आंखों का तारा, हृदय कमल का वह सूर्य भी अकस्मात् एक दिन मुझे छोड़ गया। उसके मृत देह को देखकर मैं अपने रहे सहे धैर्य को खो बैठी। **क्रमश: अगले अंक में....**

महात्मा प्रभु आश्रित अर्धनिर्वाण शताब्दी समारोह

दिनांक 16 मार्च, 2017 वीरवार से 19 मार्च, 2017 रविवार तक

स्थान : वैदिक भक्ति साधन आश्रम, आर्यनगर, रोहतक

आप सभी यज्ञ प्रेमी साधकों को सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि आश्रम ट्रस्ट ने पूज्य महात्मा जी के निर्वाण के 50 वर्ष पूरे होने पर अर्ध शताब्दी समारोह हर्षोल्लास पूर्वक मनाने का निर्णय लिया है जिसकी अध्यक्षता स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी सरस्वती करेंगे।

प्रस्तावित कार्यक्रम

यज्ञ— प्रात: एवं सायं ब्रह्मा स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी सरस्वती

वेदपाठ— कन्या गुरुकुल वाराणसी की ब्रह्मचारिणियों द्वारा

प्रवचन— 1. स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक (रोजड़, गुजरात)
2. डॉ० वाग्गीश जी आचार्य (गुरुकुल एटा)
3. आचार्य नन्दिता शास्त्री, पाणिनि कन्या महाविद्यालय, वाराणसी (उत्तर-प्रदेश)

भजन— कन्या गुरुकुल वाराणसी की ब्रह्मचारिणियों द्वारा

विशेष आकर्षण

1. 21 कुण्डीय यज्ञ जिसमें यजमान स्थायी होंगे।
2. योग साधना—प्रात: और सायं स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी द्वारा
3. सम्मान समारोह—महात्मा जी के निकट सहयोगी भक्तजनों का। कृपया आप परिचित भक्तों के बारे में शीघ्रता से मोबाइल नंबर द्वारा सूचित करें।
4. यज्ञ योग ज्योति विशेषांक—आप 31 जनवरी 2017 तक अपने लेख विशेषतया महात्मा जी की प्रेरणा, स्मृतियों आदि के बारे में भेजें।
5. पत्रिका के विशेषांक हेतु आप अपने परिवार/प्रतिष्ठान का विज्ञापन अवश्य देकर सहयोग करें। विज्ञापन दर—पूरा पृष्ठ 2000/- आधा पृष्ठ 1000/- होगा।

सहयोग एवं सुझाव

1. अर्ध शताब्दी समारोह को आकर्षक और यादगार बनाने हेतु अपने सुझाव/सहयोग आश्रम को देवें।
2. यजमान अपना स्थान शीघ्र समस्त कार्यक्रम के लिए 20 फरवरी, 2017 तक आरक्षित करवा लेवें। बाद में स्थान देना कठिन होगा।
3. आप अपना कार्यक्रम इस समारोह के लिए निश्चित कर लेवें और अन्यत्र कार्यक्रम न रखें।
4. भोजन/आवास आश्रम से नि:शुल्क होगा। स्थान न होने पर आप अपनी व्यवस्था स्वयं करेंगे। आश्रम इस कार्य में सहयोग करेगा।
5. आश्रम **80-G** के अन्तर्गत आयकर से छूट प्राप्त है। सहयोग देकर कार्यक्रम सफल बनाएं।
6. महात्मा जी का साहित्य विशेष छूट पर प्राप्त कर सकेंगे।

कृपया सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक—**शशिमुनि,** प्रबन्धक,
वैदिक भक्ति साधन आश्रम, आर्यनगर, रोहतक-124001
मोबाइल : 09899364721, आश्रम-01262-253214

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स, माता मन्दिर चौक, पाड़ा मोहल्ला, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।